१०. टॉल्स्टॉय के घर के दर्शन

– डॉ. रामकुमार वर्मा

बचपन में मैंने टॉल्स्टॉय की डायरी कई बार पढ़ी थी । उसमें उन्होंने जो बातें लिखी थीं, उनके अनुसार आचरण करने का भी मैंने प्रयत्न किया था । मुझे स्वप्न में भी यह भान न हुआ था कि कभी इस महान लेखक की मातृभूमि पर जाने का सौभाग्य प्राप्त होगा । मास्को में आने के पहले दिन से सबसे प्रबल इच्छा यह थी कि मैं 'यास्नाया पोल्याना' जाऊँ ।

'यास्नाया पोल्याना' मास्को के दक्षिण में कोई २०० किलोमीटर पर है । जब हम मास्को से रवाना हुए तो चारों ओर मंत्रमुग्ध करने वाली दृश्यावलि दिखाई पड़ी । देवदार और भोज वृक्षों के झुरमुट पंक्ति बाँधे सैनिकों की भाँति खड़े थे । हम यह दृश्यावलि देखते, कभी बातें करते, कभी इस सुषमा का मूकपान करते चले जा रहे थे । हमारी गाड़ी सुंदर सड़क पर पक्षी की भाँति उड़ी जा रही थी । रास्ते में छोटे-छोटे परंतु सुंदर मकान मिले, कुछ काठ के बने थे, कुछ कंक्रीट के चमकदार हरे और लाल रंग के थे । ऐसा लगता था मानो कोई जादूगर अपने खिलौने छोड़ गया हो ।

मुझे यह देखकर विस्मय हुआ कि एक गाँव का नाम 'चेखोव' था । 'चेखोव' यहाँ लंबे समय तक रहे थे । यह कितनी अच्छी बात है कि इस महान लेखक की स्मृति को सोवियत संघ में सँजोकर रखा गया है ।

रात में हम 'तुला' नामक छोटे किंतु बहुत पुराने शहर में रुके । तुला हमारे यहाँ के प्राचीन नगरों जैसा है । सवेरे हम 'यास्नाया पोल्याना'पहुँचे । 'यास्नाया पोल्याना' का स्वागत करने के लिए हम अपनी गाड़ी से उतर पड़े । यही वह स्थान है जहाँ की मिट्टी ने विराट प्रतिभासंपन्न मनीषी टॉल्स्टॉय को जन्म दिया था ।

प्रवेशद्‌वार पर महान लेखक की ग्रेनाइट की मूर्ति थी, जिसके चारों ओर सुंदर कटघरा था । उनकी आकृति पर गंभीर चिंतन और आत्मा की उदात्त भावना झलक रही थी । मैंने कई दिशाओं से मूर्ति के फोटो उतारे और इसके बाद जब हम चले, तो हम उस मूर्ति की ही बात सोच रहे थे । लंबे-लंबे देवदार वृक्षों के बीच से होकर एक स्पष्ट मार्ग गया था । इसपर ''यास्नाया'' लिखा था । दृश्यावलि देखने और मनचाहे फोटो लेने के बाद हम इस सुखद मार्ग से आगे बढ़े ।

चलते-चलते हम उस प्रासाद में पहुँचे जहाँ टॉल्स्टॉय रहा करते थे । यह प्रासाद पिछली शती के पहले चरण में बना था । इसके पास ही कभी वह मकान था जहाँ १८२८ में टॉल्स्टॉय पैदा हुए थे । अब इस मकान का

परिचय

जन्म : १९०५, सागर (म.प्र.)
मृत्यु: १९९०
परिचय : डॉ. रामकुमार वर्मा जी आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रमुख एकांकीकार के रूप में जाने जाते हैं । आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । आप एकांकीकार, उपन्यासकार, आलोचक एवं कवि के रूप में प्रसिद्‌ध हैं। आप हास्य और व्यंग्य दोनों विधाओं में समान रूप से पकड़ रखते थे । आपने नाटकों के माध्यम से देशवासियों में भारतीयता, देशप्रेम और सामाजिक चेतना जगाने का कार्य किया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'चित्ररेखा' (उपन्यास), 'एकलव्य', 'उत्तरायण', 'अहिल्या' (महाकाव्य), 'बादल की मृत्यु', 'दस मिनट', 'पृथ्वीराज की आँखें', 'रेशमी टाई', 'दीपदान', 'रूपरंग' (एकांकी), 'विजय पर्व', 'सत्य का स्वप्न'(नाटक) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत पाठ में रामुकमार वर्मा जी ने प्रसिद्‌ध रूसी लेखक टॉल्स्टॉय जी के जीवन का विवरण दिया है । यहाँ टॉल्स्टॉय जी के जीवन, परिवार, भवन, ग्रंथालय, उनकी कृतियाँ, समाधि आदि के बारे में विशद जानकारी प्राप्त होती है ।

अस्तित्व नहीं है क्योंकि जब यह पुराना और जीर्ण-शीर्ण हो गया तो एक जमींदार के हाथ बेच दिया गया । उसने इसके मसाले से नया मकान बनवाया। दो पेड़ों के बीच जहाँ पहले वह मकान था, उस जगह लिखा है-यहाँ वह मकान था; जिसमें टॉल्स्टॉय का जन्म हुआ था ।

जिस मकान में टॉल्स्टॉय रहते थे, वह बड़ा और सुंदर है । यहीं उन्होंने अपनी महान रचनाएँ लिखीं और अपने युग के प्रसिद्‌ध लेखकों से मिले ।

'यास्नाया पोल्याना' टॉल्स्टॉय के नाना का था । टॉल्स्टॉय की माँ अपने पिता की इकलौती बेटी थीं । टॉल्स्टॉय के पिता रूसी सेना में अधिकारी थे । उनके पास कोई विशेष संपत्ति न थी । वे 'यास्नाया पोल्याना' में रहते थे । वौल्कोन्स्की ने जब अपनी बेटी की शादी फौजी अफसर से की तो यह प्रासाद दहेज में दिया ।

टॉल्स्टॉय जब केवल डेढ़ साल के थे तभी उनकी माँ नहीं रही और पितृवियोग का सामना उन्हें नौ साल की उम्र में करना पड़ा । उनका लालन-पालन उनकी फूफी पेल्लागेया इलिनित्विना युश्कोवा ने किया । जब टॉल्स्टॉय बड़े हुए, तब वोल्गा नदी के तटवर्ती कजान नगर चले गए । कजान विश्वविद्‌यालय में उन्होंने अरबी और तुर्की भाषाएँ, दर्शन तथा कानून का अध्ययन किया परंतु 'यास्नाया पोल्याना' के लिए वे बराबर ललकते रहे । उनके मन में यह बात पैठी हुई थी कि किसानों के बीच रहने से बढ़कर कोई चीज नहीं । टॉल्स्टॉय किसानों की तरह खेती करते थे फिर भी विज्ञान और यात्रा में उनकी रुचि रही । इसीलिए वे क्राकेशिया चले गए और रूसी सेना में भर्ती हो गए ।

रूसी सेना उस समय पहाड़ी कबीलों से लड़ रही थी । काकेशिया के जीवन के अनुभवों के आधार पर उन्होंने ''कोस्साक'' की रचना की । इसमें उनके जीवन की बहुत सी बातें हैं ।

१८६२ में टॉल्स्टॉय ने २४ वर्ष की आयु में एक चिकित्सक की अठारह वर्षीय पुत्री सोफिया आंद्रएवा से शादी की ।

उसके बाद हम संग्रहालय के निर्देशक के साथ संग्रहालय प्रासाद में गए । सबसे पहले हमने टॉल्स्टॉय का बहुत ही भरा-पूरा पुस्तकालय देखा। पुस्तकालय की २८ अलमारियों में लगभग २२००० पुस्तकें हैं, जिनमें अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी, लातिन, यूनानी, स्पेनी, इटालियन तथा तातार भाषाओं की पुस्तकें थीं । टॉल्स्टॉय तेरह भाषाएँ जानते थे और वृद्‌धावस्था में भी हिब्रू भाषाएँ इसलिए सीखी थीं ताकि वे उन भाषाओं के साहित्य की महान कृतियों को मूल रूप में पढ़ सकें । उनकी कुछ कृतियाँ फ्रांसीसी भाषा में भी हैं । वे बहुत ही प्रभावी हैं ।

पुस्तकालय के बाद हम बैठकखाने में गए जो अनेक तैलचित्रों से सजा

अपनी मातृभाषा में उपलब्ध लोकगीत सुनिए तथा उसका भावार्थ अपने शब्दों में सुनाइए ।

किसी संग्रहालय में जाकर संग्रहालय की सचित्र जानकारी अपनी कॉपी में लिखिए ।

हुआ है । इसी कमरे में टॉल्स्टॉय अपने समानधर्मा लेखकों से मिलते थे । दीवारों पर अनेक चित्र लगे थे । एक चित्र टॉल्स्टॉय की पुत्री मारिया ल्वोला का था जिसे वे बहुत प्यार करते थे । ल्वोला ने जन-कल्याण के कार्यों को अपना जीवन अर्पित कर दिया था । अपंगों और निर्धनों की सेवा में वे बराबर लगी रहती थीं । उनकी मृत्यु १६६० में ३५ वर्ष की आयु में हो गई । टॉल्स्टॉय को उनकी मृत्यु से अतीव दुख हुआ ।

कमरे के बीचोंबीच एक बड़ी मेज थी । उसके पीछे दीवार से सटी हुई एक छोटी मेज शतरंज खेलने की थी और उसके बाद कोने में एक अंडाकार मेज थी, जिसके इर्द-गिर्द गोल पीठवाली कुर्सियाँ थीं । एक बार यहीं बैठकर टॉल्स्टॉय ने अपनी रचनाएँ गोर्की तथा अन्य लेखकों और अपने परिवार वालों को सुनाई थीं ।

दूसरे कोने में टॉल्स्टॉय की संगमरमर की मूर्ति थी । चित्रों के नीचे दीवार के सहारे बहुत बड़ा पियानो रखा था । टॉल्स्टॉय यह पियानो बजाया करते थे। उन्हें संगीत का बहुत शौक था । कभी-कभी संगीत सुनते-सुनते या स्वयं गान-वाद्‍य करते-करते उनकी आँखें सजल हो जातीं । लोकगीत उन्हें विशेष रूप से प्रिय थे । लोकगीतों को वे शास्त्रीय संगीत से अधिक मूल्यवान मानते थे । उनका मत था कि इनकी शक्ति प्रेरणा में निहित रहती है जो जनता की आत्मा से अपने आप निकल पड़ती है ।

ज्यों ही हम टॉल्स्टॉय के अध्ययन कक्ष में घुसे, हमने एक बड़ी मेज देखी जिसपर लिखने की विविध चीजें रखी थीं । मेज पर पुस्तकें ठीक उसी तरह रखी थीं जिस तरह लेखक ने उन्हें रखा था । मोमबत्ती भी जिस तरह उन्होंने बुझा दी थी, उसी तरह रखी थी । वह न कभी जलाई गई और न उसे कभी किसी ने छुआ ।

एक तरफ पुस्तकों का शेल्फ था जिसमें अनेक पुस्तकें थीं । मेरे साथी ने शेल्फ से एक पुस्तक निकाल ली और कहा, ''देखिए इसका कुछ संबंध गांधीजी से है ।''

यह महात्मा गांधीजी की पुस्तक 'दक्षिण अफ्रीका में एक भारतीय देशभक्त' थी । यह पुस्तक महात्मा गांधीजी ने टॉल्स्टॉय के पास भेजी थी । टॉल्स्टॉय ने इस पुस्तक के किनारे-किनारे अनेक टिप्पणियाँ लिखी थीं ।

इस कमरे की सबसे उल्लेखनीय वस्तु वह तख्तपोश था जिसपर टॉल्स्टॉय का जन्म हुआ था । मैंने स्मारक के रूप में उसका फोटो लिया ।

इसके बाद हमने टॉल्स्टॉय का शयनागार देखा । वहाँ उनकी पत्नी के कई चित्र थे । हमने वहाँ एक घंटी, एक मोमबत्ती और कुछ दूसरी चीजें बिस्तर के पास मेज पर देखीं । एक आराम कुर्सी पर ऊनी कमीज टँगी हुई

पठनीय

राहुल सांकृत्यायन जी की डायरी अंतरजाल की सहायता से पढ़िए तथा उसके प्रमुख मुद्‍दे लिखिए ।

थी । एक कोने में सिंगार की अनेक चीजें रखी थीं । टॉल्स्टॉय सदा स्वच्छ पानी स्वयं लाते थे और गंदा पानी साफ करते थे । वे अपने कमरे को ठीक रखने में किसी और की सहायता नहीं लेते थे । दीवार पर एक बेंत, एक चाबुक तथा कुछ और चीजें टँगी हुई थीं । टॉल्स्टॉय अच्छे घुड़सवार थे । एक बार घुड़सवारी में उनकी टाँग में चोट आ गई थी, उस समय बैसाखी का उपयोग करना पड़ा था । वह भी कमरे में रखी है । हमने एक जोड़ा न बजने वाली घंटियाँ और एक संदूक देखा जिसमें अब भी टॉल्स्टॉय के कपड़े थे । उसकी बगल में एक बंद अलमारी थी जिसमें वे अपने लेखों के मसविदे और पांडुलिपियाँ रखते थे ।

इससे मिला हुआ शयनागार उनकी पत्नी का था । उस कमरे की दीवारों पर अनेक चित्र लगे थे । सबसे अधिक उल्लेखनीय चित्र उनके सबसे छोटे पुत्र वालिया का था जो सात वर्ष की उम्र में परलोकवासी हो गया था । वह बालक बहुत ही प्रतिभा संपन्न था और टॉल्स्टॉय को यह आशा थी कि एक दिन वह साहित्य में उनका अनुसरण करेगा । बालक की मृत्यु ने उन्हें मर्माहत कर दिया ।

द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध के अवसर पर जर्मन फासिस्ट सेनाओं ने यास्नाया पोल्याना पर अधिकार कर लिया था, परंतु सौभाग्यवश स्थानीय अधिकारियों ने नाल्सियों के आने के पहले ही समस्त मूल्यवान चीजें साइबेरिया भेज दी थीं । अगर ऐसा न हुआ होता तो यह सारा अमूल्य भंडार सभ्य जगत के लिए सदा के लिए नष्ट हो गया होता । नात्सी सैनिकों ने कई बार प्रासाद को जला देने का प्रयत्न किया लेकिन स्थानीय निवासियों ने बड़े साहस के साथ हर बार आग बुझा दी ।

युद्‌ध समाप्त होने के बाद सारी चीजें फिर ले आई गईं ।

ऊपर के कमरे देखने के बाद हम टॉल्स्टॉय के काम करने के कमरे में आए । जो इमारत के नीचे के हिस्से में है । गोर्की और चेखोव यहाँ कई बार आए थे । इसी कमरे में ''अन्ना कारेनिना'', ''युद्‌ध और शांति''तथा अन्य महान कृतियों की रचना की गई थी । इस कमरे के सुखद, शांत वातावरण पर दृष्टि गए बिना नहीं रह सकती ।

अब हम टॉल्स्टॉय की समाधि देखने गए । देवदार और सरों के लंबे-लंबे पेड़ मनीषी टॉल्स्टॉय के इस चिर विश्रामागार के पास संतरी जैसे खड़े हैं । भोज वृक्षों की छाया में हरियाली से ढँकी यह समाधि है ।

ऐसे महान लेखक की कितनी सादी-सी समाधि ! इस महामानव की स्मृति में, जिसने सारे जीवन सीधे-सादे जनों की सेवा की, हम नतमस्तक हो गए ।

—— ० ——

संभाषणीय

शतरंज के खिलाड़ी आनंद विश्वनाथन के अनुभव पढ़कर चर्चा कीजिए ।

शब्द संसार

मनीषी पुं.सं.(सं.) = विद्वान
अस्तित्व पुं.सं.(सं.) = विद्यमानता, मौजूदगी
सिंगार पुं.सं.(दे.) = सजावट, सजधज
मसविदा पुं.सं.(दे.) = मसौदा
मर्माहत पुं.वि.(सं.) = मर्म पर चोट पहुँचा हुआ

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

टॉल्स्टॉय के शयनकक्ष में देखी गई वस्तुएँ

(२) लिखिए :

अ. बंद अलमारी में ये चीजें थीं ______, ______

आ. पहरेदार के रूप में खड़े वृक्ष : ______, ______

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

टॉल्स्टॉय के अन्य शौक

(४) कृति पूर्ण कीजिए :

पुस्तकालय में इन भाषाओं की पुस्तकें हैं

(५) कोष्ठक के उचित शब्द का प्रयोग कीजिए :

१. कमरे के बीचोंबीच एक .... मेज थी ।
(गोलाकार, अंडाकार, बड़ी)

२. तुला हमारे यहाँ के प्राचीन .... जैसा है ।
(शहरों, गाँवों, नगरों)

३. प्रवेश द्वार पर महान लेखक की .... मूर्ति थी ।
(संगमरमर, ग्रैनाइट, सफेद पत्थर)

४. उनकी कुछ कृतियाँ .... भाषा में हैं ।
(फ्रांसीसी, रूसी, अंग्रेजी)

(६) रिश्ते लिखिए :

टॉल्स्टॉय

वालिया ....

मरिया ल्वोला ....

पेल्लागेया इलिनित्विना युश्कोवा ....

सोफिया आंद्रेएवा ....

(७) शब्दसमूह के लिए शब्द लिखिए :

१. जहाँ अध्ययन किया जाता है = ______

२. जहाँ आराम किया जाता है = ______

३. जहाँ पुस्तकें ही संगृहीत की जाती हैं = ______

४. जिस दरवाजे से प्रवेश किया जाता है = ______

अभिव्यक्ति

'संग्रहालय संस्कृति और इतिहास के परिचायक होते हैं' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) अर्थ के आधार पर निम्न वाक्यों के भेद लिखिए :

१. क्या पैसा कमाने के लिए गलत रास्ता चुनना उचित है ? [ ]
२. इस वर्ष भीषण गरमी पड़ रही थी । [ ]
३. आप उन गहनों की चिंता न करें । [ ]
४. सुनील, जरा ड्राइवर को बुलाओ । [ ]
५. अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं ? [ ]
६. सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया । [ ]
७. हाय ! कितनी निर्दयी हूँ मैं । [ ]
८. काकी उठो, भोजन कर लो । [ ]
९. वाह ! कैसी सुगंध है । [ ]
१०. तुम्हारी बात मुझे अच्छी नहीं लगी । [ ]

(२) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों में अर्थ के आधार पर परिवर्तन कीजिए :

१. थोड़ी बातें हुईं । (निषेधार्थक वाक्य)
२. मानू इतना ही बोल सकी । (प्रश्नार्थक वाक्य)
३. मैं आज रात का खाना नहीं खाऊँगा । (विधानार्थक वाक्य)
४. गाय ने दूध देना बंद कर दिया । (विस्मयार्थक वाक्य)
५. तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए । (आज्ञार्थक वाक्य)

(३) प्रथम इकाई के पाठों में से अर्थ के आधार पर विभिन्न प्रकार के पाँच-पाँच वाक्य ढूँढ़कर लिखिए ।

(४) रचना के आधार पर वाक्यों के भेद पहचानकर कोष्ठक में लिखिए :

१. अधिकारियों के चेहरे पर हल्की-सी मुसकान और उत्सुकता छा गई । [-------]
२. हर ओर से अब वह निराश हो गया था । [-------]
३. उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिलते ही उसे चलाऊँ । [-------]
४. वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली । [-------]
५. मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं । [-------]
६. अभी समाज में यह चल रहा है क्योंकि लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं [-------]

(५) रचना के आधार पर विभिन्न प्रकार के तीन-तीन वाक्य पाठों से ढूँढ़कर लिखिए ।

उपयोजित लेखन

निबंध लेखन : 'युवापीढ़ी का उत्तरदायित्व' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

7J71BE